कामकाजी, बड़ी आयु के बच्चों की शुरूआती पठन व लेखन की प्रक्रिया का अध्ययन

Organisation for Early Literacy Promotion
ELP

टीचर्स रिसर्च फैलोशिफ के अन्तर्गत रिसर्च प्रोजेक्ट रिपोर्ट
सी.एल.एल.सी फलटन को प्रस्तुत

शोधकर्त्ता : नन्दलाल माली

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पृष्ठ भूमि

प्रारंम्भिक साक्षरता परियोजना (ई.एल.पी.) ने राजस्थान मे रात्रिशालाओ के साथ कार्य जनवरी 08 मे ''वेयर फुट कालेज'' एस.डब्ल्यू.आर.सी तिलोनिया की साझेदारी के साथ 8 रात्रिशालाओ मे लागू किया गया, जो कि अजमेर जिले के सिलोरा पंचायत समिति के कदमपुरा क्षेंत्र मे हैं। इसके पश्चात 2009 मे इसी कार्य को एस.डब्ल्यू.आर.सी. से जुड़ी संस्थाओं के लगभग 111 रात्रिशालाओ में लगभग 2500 बच्चो को ई.एल.पी परियोजना से जोडा गया। यह सभी रात्रिशाला एस.डब्ल्यू.आर. के फील्ड सेन्टर के कार्य क्षेत्र में है, और राजस्थान के चार जिलों में फेली हुई है। ई.एल.पी की विधियों को इन रात्रिशालाओ में इस सोच से लागू किया गया कि इन्हें स्थानीय परिवेश के अनुकूल बनाया जाएं । फील्ड विजिट, रात्रिशाला के बच्चो का अवलोकन करके एवं शिक्षको के साथ निरन्तर बैठको द्वारा इस कार्य का मॉनीटर किया गया। ई.एल.पी. द्वारा बनाए गए विशेष मूल्यांकन एव अंकीकरण प्रपत्रों द्वारा बच्चो के शैक्षणिक स्तर की प्रगति पर निरन्तर दृष्टि रखी गई। शिक्षको का प्रशिक्षण एक निरन्तर प्रक्रिया है।

समय—समय पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशालाएं आयोजित की जाती है। एस.डब्ल्यू.आर.सी के शिक्षा कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण किया गया है। कक्षाओ मे ई.एल.पी. विधि को लागू करने के लिए एस.डब्ल्यू.आर.सी व ई.एल.पी. की टीम मिल कर रात्रिशालाओ का भ्रमण करते है इस विधि की सामग्री को कक्षा के अनुभव लेकर एवं समयबद्ध कार्य योजना बना कर लागू किया गया है । ई.एल.पी की विधियों को रात्रिशालाओ मे लागू करते समय यह कोशिश रहती है कि उस समाज के परिवेश व ढांचे की समझ को और गहरा किया जाए, जिसका असर बच्चो के सीखने पर होता है। साथ ही मे जिस समुदाय से बच्चे आते है उनका साक्षरता व शिक्षा के प्रति सोच व दृष्टिकोण को भी समझने का प्रयास किया जाता है। इस क्षेत्र मे रात्रिशालाओ मे जो बच्चे आते है वह समाज के गरीब व पिछडे वर्गो से है और उन परिवारो से जो समाज के हाशिये पर जीते है। यह बच्चे बहुत छोटी उम्र से ही अपने परिवारो के प्रोढो के साथ दैनिक जीवन के संघर्ष व जिम्मेदारिया बॉटते है, ज्यादातर बच्चे दिन मे काम करते है चाहे घर का काम है या बाहर खेत मे । काफी बच्चे अपना दिन पशुओ को चराने मे बिता देते है।

सी.एल.एल.सी के टीचर फैलोशिप कार्यक्रम के तहत ई.एल.पी के दो फील्ड समन्वयक व सहायक फील्ड़ समन्वयक ने एस.डब्ल्यू.आर.सी की रात्रिशालाओ में यह अध्ययन कार्य किया है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

आभार :

सर्वप्रथम इस अध्ययन में सहयोग देने वालों को हम धन्यवाद देना चाहते हैं। जिन्होंने निरन्तर इस अध्ययन को करने में सहयोग दिया। इस अध्ययन में मुझे बहुत से लोगों द्वारा समय–समय पर मार्ग दर्शन मिला। अध्ययन के तहत् जो भी समस्याएं आई उन्हें धीरज के साथ निपटाया और जिस उद्देश्य से यह अध्ययन किया गया था उसे पूरा करने में मदद की। इन सब का सहयोग इस अध्ययन को करने में महत्त्वपूर्ण रहा है। हम निम्न सभी का धन्यवाद व आभार व्यक्त करते हैं :–

- **C.L.L.C. संस्था फलटन** – जिन्होंने Fellow Ship उपलब्ध करवाकर इस अध्ययन को संम्भव करवाया ।
- **ड़ॉ. मैक्सीन वर्न स्टीम – प्रगति शिक्षण सस्थान फलटन** – जिन्होंने इस अध्ययन को करने के लिए हमारा चयन किया एवमं हमें प्रोत्साहित किया।
- **S.W.R.C तिलोनिया शिक्षा विभाग, श्री रामेश्वर जी, शिक्षा कार्यकर्ता, रात्रिशाला शिक्षक, श्री शिवराज जी व अन्य सदस्य** – जिनके सहयोग के बिना यह अध्ययन कार्य पूरा नहीं हो पाता ।
- **ELP निर्देशक श्रीमति कीर्ति जयराम** – जिन्होंने हर कदम पर हमारा मार्ग दर्शन करके अध्ययन की पद्धतियों से हमें अवगत करवाया। एकत्रित किया गया ड़ेटा का विश्लेषण करने में हमारा मार्ग दर्शन किया एवमं अध्ययन की फाइनड़िग को प्रस्तुत करने में हमारा मार्ग दर्शन किया।
- **ELP समन्वयक किरण दुबे** – जिन्होंने फील्ड़ स्तर पर अध्ययन करने में व केस स्टेड़ी को करने में मार्ग दर्शन किया।
- **ड़ॉ. आरती साहनी रिसर्च समन्वयक** – जिन्होंन अध्ययन की प्रस्तुति करने में हमारा सहयोग किया।
- **श्री अमर सिंह – प्रोग्राम सहायक** – जिन्होंने रिपोर्ट टाईप की।
- **अध्ययन से जुड़े समस्त बच्चे** – जिन्होंने हमें स्वीकार कर अपनी प्रगति का बारिकी से अवलोकन करने की इजाजत दी। जिससे हमारी सीखने–सीखाने की समझ गहरी हुई। इन्हीं बच्चों पर हमारा अध्ययन टिका हुआ था।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

- **अभिभावक** – हम सभी बच्चों के अभिभावकों व समुदायों के आभारी हैं जिन्होंने अपने जीवन के कुछ हिस्से हमारे साथ बाटें।
- **S.W.R.C तिलोनिया संस्था** – हम विशेष धन्यवाद देते है। जिन्होंने हमें रात्रिशालाओं में अध्ययन करने का मौका दिया।

नन्दलाल माली

फील्ड़ समन्वयक सहायक
ई.एल.पी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

विषय वस्तु :

विषय		पेज सं.
1.	विषय	5
2.	उद्देश्य	5
3.	इन बच्चों को ही क्यों चुना ?	5
4.	अध्ययन क्षेत्र का परिचय	6
5.	अध्ययन की प्रक्रिया	6
6.	प्रत्येक बच्चे का संक्षिप्त में परिचय	6
	6.1 नोरती बागरिया	6
	6.2 गीता बलाई	7
	6.3 सोनी बलाई	7
	6.4 सबीना मुसलमान	7
	6.5 ग्यारसी बलाई	7
7.	शिक्षण के तरीकों का संक्षिप्त में वर्णन	8
	7.1 रिसर्च के बच्चों के शिक्षण कार्य में प्रगति	8
8.	रिसर्च के बच्चों का वर्तमान में पठन–लेखन का स्तर	9
9.	भाग 1 रिसर्च के बच्चों के शिक्षण कार्य की व्यक्तिगत रिपोर्ट	10
	9.1 नोरती बागरिया	10
	9.2 गीता बलाई	11
	9.3 सोनी बलाई	13
	9.4 सबीना मुसलमान	14
	9.5 ग्यारसी बैरवा	15
10	निष्कर्ष	17
11	भाग 2 केस स्टेड़ी	17
	11.1 ग्यारसी बैरवा	17
	11.2 गीता बलाई	18
	11.3 नोरती बागरिया	19
	11.4 समीना मुसलमान	20
	11.5 सोनी बलाई	23
12	भाग 3 अध्यापक साक्षात्कार	24
	12.1 विश्राम भांभी	24
	12.2 हनुमान शर्मा	26
13.	बड़े व छोटे बच्चों की तुलना	28
	13.1 बड़े व छोटे बच्चों की माहवार तुलनात्मक रिपोर्ट	28
14.	निष्कर्ष	30
15.	सीख	30
16.	सुझाव	30

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कामकाजी बड़ी आयु के बच्चों की शुरूआती पठन व लेखन की प्रक्रिया का अध्ययन

1. विषय :

कामकाजी बड़े बच्चों को वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था, रात्रिशाला से जोड़कर उनकी शुरूआती पठन व लेखन की प्रक्रिया और उनसे जुड़ी जरूरतों की समझ विकसित करने का अध्ययन

2. उद्‌देश्य :

- कामकाजी अनामांकित बच्चों को वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था से जोड़कर उनमें शुरूआती पठन व लेखन की समझ विकसित करने की प्रक्रिया को करीब से समझना।
- करीबी से छोटी उम्र के बच्चों में पढ़ने–लिखने की समझ व गति को समझना।
- उनकी समझ के साथ पढ़ने और लिखने की प्रक्रिया में रूकावटों को नजदीकी से समझना इन रूकावटों को दूर करने का प्रयास करना और सहयोगी तथ्यों को पहचानना।
- उनमें पढ़ने–लिखने की जिज्ञासा को समझ कर सरल तरीकों का उपयोग करना ताकि उनकी शुरूआती पढ़न–लेखन की समझ विकसित हो सके।
- पढ़ने–लिखने व समझने में आने वाले सहयोगी तथ्यों को पहचानना।
- इस शोधकार्य की सीख को अपनी कक्षाओं में पढ़ाने के तौर–तरीकों में शामिल करना।

3. इन बच्चों को ही क्यों चुना, दूसरे बच्चों को क्यों नहीं चुना ?

– इन बच्चियों में पठन व लेखन की गति को जानने के लिए ।

– बड़ी आयु के बच्चों में व छोटे आयु के बच्चों में पठन लेखन की गति को मापने के लिए ।

– बड़ी उम्र व छोटी उम्र के बच्चों में पढ़ने–लिखने की प्रक्रिया समझने के लिए।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

– यह बच्चे विशेष जाति से है जैसे बागरिया, बलाई, मुसलमान, बैरवा इनके परिवार व सामाजिक पृष्ठभूमि का आंकलन करना।

4. **अध्ययन क्षेत्र का परिचय –** गाँव रामपुरा व चुरली, जो सिलोरा पंचायत समिति, जिला अजमेर (राज.) में स्थित है। यह गाँव शहरी क्षेत्र से दूर हैं। यहां रोजगार के लिए शहरों पर निर्भर रहना होता है। पिछले कई वर्षो से अकाल की स्थिति हैं। इससे कारण लोग पलायन पर भी जाते हैं। गाँव में लड़कियों की शिक्षा के प्रति लोग कम जागरूक हैं।

5. अध्ययन की प्रक्रिया

1. शुरूआती मूल्यांकन
2. हर बच्चे का कक्षा के भीतर सप्ताह में एक बार अवलोकन करके ड़ायरी में लिखना।
3. समय–समय पर लिखित कार्य या वर्कशीट लेना।
4. 6 महीने के दौरान अवलोकन के नोट्स व बच्चों के कार्य को सामने रखकर हर बच्चे की विस्तृत प्रगति रिपोर्ट लिखकर, हर बच्चे की प्रगति का निष्कर्ष निकालना ।
5. प्रत्येक बच्चे के घर जाकर उनके अभिभावकों से सम्पर्क करना और उनकी कैस स्टड़ी लिखना ।
6. टीचर्स के साथ साक्षात्कार ।
7. दोनों आयु वर्ग के बच्चों की पठन/लेखन प्रक्रिया की तुलना करना।

6. प्रत्येक बच्चे का संक्षिप्त में परिचय

6.1 नोरती बागरिया – उम्र 14 वर्ष, गाँव रामपुरा, पिता हनुमान बागरिया, माँ सन्तरा, परिवार में 4 भाई–बहन है। नोरती बकरियों को चराने का कार्य करती है व माता–पिता मजदूरी का

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कार्य करते है। इनकी आर्थिक स्थिति इनकी पुस्तैनी जमीन गिरवी व लॉन चुकाने के कारण खराब है। परिवार में कोई भी पढ़ा–लिखा नहीं है। मकान कच्चा है। बिजली नहीं है।

6.2 गीता बलाई –

उम्र 15 वर्ष, गाँव रामपुरा, पिता उगमाराम, गीता अपने चाचा नारू जी के पास तीन–चार साल तक रही थीं। अब गीता अपने पिता के पास ही रहती हैं। गीता दिन में बकरियों को चराने का काम करती हैं तथा अपने घर का सारा काम करती है । गीता की दों बहने हैं और दोंनों ही की शादीयां छोटी उम्र में हो गई थी। आर्थिक स्थिति कमजोर है। घर में कोई भी पढ़ा–लिखा नहीं हैं।

6.3 सोनी बलाई – उम्र 13 वर्ष, गाँव रामपुरा, सोनी अपने बुआ और फुफा के पास रहती है क्योंकि उनके कोई औलाव नहीं है। सोनी फुफा के साथ बकरियां चराने जाती है। घर में कोई भी पढ़ा–लिखा नहीं हैं।

6.4 सबीना मुसलमान – उम्र 12 वर्ष, गाँव चुरली, पिता हनीफ मोहम्मद, सबीना 6 भाई–बहन हैं। पिता बकरों का व्यापार करते हैं। मकान जर्जर अवस्था में है। आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर हैं।

6.5 ग्यारसी बैरवा – उम्र 12 वर्ष, गाँव चुरली, पिता रामस्वरूप, माता सम्पत्ति देवी, पिता 5वीं कक्षा तक पढ़े–लिखे है। परिवार में 1 लड़का व 3 लड़कियां हैं। पिता मजदूरी का कार्य करते हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

7. शिक्षण के तरीकों का संक्षिप्त वर्णन

7.1 रिसर्च के बच्चों के शिक्षण कार्य में प्रगति

बच्चे का नाम	बच्चों के शिक्षण कार्य की प्रगति अक्टूबर 2009 से मार्च 2010 तक			
	माह अक्टूबर 2009	माह नवम्बर से जनवरी	माह फरवरी	माह मार्च 2010
नोरती	वर्ण/अक्षर व बुनियादी मोड़ की पहचान नहीं	वर्ण/अक्षर की पहचान शब्द की शुरूआती ध्वनि की पहचान हुईं	अक्षर चार्ट से पास–पास के अक्षरों को मिलाकर शब्द बनाना	अक्षर चार्ट से शब्द निर्माण व शब्दों का पठन (दो अक्षरों वाले शब्दों का पठन व लेखन) व चित्र बनाना
गीता	वर्ण/अक्षर पहचान नहीं थी। वर्ण/अक्षर के बुनियादी मोड आते थे	शब्द की शुरूआती ध्वनि तथा वर्ण की पहचान (वर्ण समूह 1)	अक्षर चार्ट से शब्द निर्माण तथा स्थानीय शब्दों का ज्ञान (वर्ण समूह–1) शब्दों के चित्र बनाना	वर्ण समूह–1 के शब्दों का पठन व लेखन, कविता के शब्द लिखना तथा चित्र बनाना
सोनी	वर्ण पहचान नहीं थी। वर्ण/अक्षर के बुनियादी मोड आते थे	शब्द की शुरूआती ध्वनि की पहचान तथा वर्ण की पहचान (वर्ण समूह 1) शब्द का श्रुतलेख की समझ नहीं थी	शब्द पठन करने लगी। शब्दों के चित्र बनाने लगी वाक्य पठन करने लगी	अक्षर चार्ट से शब्द निर्माण व चित्र वर्ण समूह–2 के वर्णो की पहचान
सबीना	वर्ण माला में कुछ वर्णो की पहचान परन्तु समझ नहीं थी।	शब्द की शुरूआती ध्वनि तथा वर्ण की पहचान बनीं (वर्ण समूह 1) अक्षरों को जोड़कर शब्द निर्माण	अक्षरों को जोड़कर शब्द निर्माण की समझ तथा पठन । शब्द और वाक्य का श्रुतलेख करने लगी शब्दों के चित्र बनाना आने लगा	अक्षर चार्ट से शब्द निर्माण व चित्र वर्ण समूह–2 के वर्णो की पहचान। कविता के शब्द, वाक्य, तीन अक्षरों के शब्दों का उच्चारण, पठन व लेखन ।
ग्यारसी	वर्ण माला में कुछ वर्णो की पहचान परन्तु समझ नहीं थी।	शब्द की शुरूआती ध्वनि तथा वर्ण की पहचान करने लगी अक्षरों को जोड़कर शब्द निर्माण (वर्ण समूह 1)	शब्द पठन करने लगी । शब्दों के चित्र बनाना आने लगा	अक्षर चार्ट से शब्द निर्माण व चित्र वर्ण समूह–2 के वर्णो की पहचान।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

8. रिसर्च के बच्चों का वर्तमान में पठन–लेखन का स्तर

नोरती	नोरती अभी वर्ण समूह–1 में हैं। नोरती का ठहराव अनियमित रहा । उसको अभी अक्षर चार्ट से शब्द निर्माण, दो अक्षरो वाले शब्दों का पठन ही कर पाती हैं।
गीता	गीता वर्ण समूह–1 के शब्दों का पठन व लेखन, कविता के शब्द लिख लेती हैं तथा शब्दों के चित्र भी बना लेती हैं। वर्ण समूह–2 के वर्णो की पहचान, पठन व लेखन कर लेती हैं
सोनी	सोनी वर्ण समूह–1 के शब्दों का पठन, लेखन, कविता, वाक्य भी लिख लेती हैं तथा शब्दों के चित्र भी बना लेती हैं। वर्ण समूह–2 के वर्णो की पहचान व पठन कर लेती हैं तथा इन वर्णो के श्रुतलेख भी लिख लेती हैं। सोनी में सीखने की बुनियादी समझ आ गई है। वह ध्वनि व चिन्ह की पहचान को समझने लगी हैं।
सबीना	सबीना वर्ण समूह–1 के शब्दों का पठन व लेखन, कविता, वाक्य भी लिख लेती हैं तथा शब्दों के चित्र भी बना लेती हैं। वर्ण समूह–2 के वर्णो की पहचान व पठन कर लेती हैं तथा इन वर्णो के श्रुतलेख भी लिख लेती हैं। सबीना में सीखने की ललक है उसे ध्वनि व चिन्ह की पहचान हो गई है। वर्ण समूह–1 के अक्षर चार्ट व दूसरे वर्ण समूह के अक्षर चार्ट को मिला कर भी शब्द निर्माण कर लेती हैं।
ग्यारसी	ग्यारसी वर्ण समूह–1 के शब्दों का पठन व लेखन, कविता, वाक्य भी लिख लेती हैं तथा शब्दों के चित्र भी बना लेती हैं। वर्ण समूह–2 के वर्णो की पहचान व पठन कर लेती हैं तथा इन वर्णो के श्रुतलेख भी लिख लेती हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

9. भाग 1 रिसर्च के बच्चों के शिक्षण कार्य की व्यक्तिगत प्रगति रिपोर्ट

9.1 नोरती बागरिया

अक्टूबर व नवम्बर 2009

- नोरती को अक्टूबर में वर्ण पहचान नही थी। तथा लेखन नहीं आता था। वह **क** को उल्टा तथा **म** को आधा ही बना पाती थी।
- प्रारम्भिक माह, उसे वर्ण के बुनियादी मोड़ तथा वर्ण समूह पद्धति से पढ़ाना प्रारम्भ किया तो उसने वर्ण के चिन्ह तथा उसके मोड़ का अभ्यास प्रारम्भ कर दिया । उसने सीखा की क को उल्टा लिखने पर इसकी दिशा बदल जाती है। जो सही नहीं है। अत : प्रत्येक वर्ण/ध्वनि का एक नियत चिन्ह होता है। नवम्बर तक नोरती को यह समझ बैठ गई कि जो क का है उसे हमेशा इसी रूप में लिखते है। उसे पक्का करने के लिए माड़ बेटा मांड़ बाये हाथ का चुल्हा और फिर मांड़ बेटा मांड़ दाये हाथ का चुल्हा इस प्रकार वर्ण के चिन्ह तथा उसकी ध्वनि पर ध्यान दिया गया।
- नोरती अब वर्ण की आकृति देखकर नकल कर लेती है। लेकिन अभी चिन्ह तथा ध्वनि का तालमेल नहीं बैठा पाई है।

दिसम्बर 2009 व जनवरी 2010

- नोरती की शाला में अनियमिता के चलते दिसम्बर के शुरू में उसने अ, प को उल्टा लिखती हैं। अतः उसे बुनियादी मोड़ का अभ्यास जारी रखा गया तथा जनवरी तक नोरती को शब्द की शुरूआती पहचान जैसे कमेड़ी, काचरा, पाटी, परीण्डा, आदि आवाज की पहचान तथा उसके वर्ण/चिन्ह को लिख लेना सीख गई। घर की चीजों के नाम से प्रथम ध्वनि तथा किसी शब्द के प्रथम अक्षर की पहचान बनने लग गई। फिर दो ध्वनि को जोड़ने का अभ्यास करवाया गया।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

- इसके लिए अक्षर चार्ट के पास–पास वाले अक्षर नाना, नानी, लाला, लाली, काका, काकी जोड़ना सीख पाई। लेकिन शब्द का श्रुतलेख नहीं लिख पाती है। वर्णो का श्रुतलेख लिख लेती है।

फरवरी 2010

- फरवरी के शुरूआत में नोरती का पुरा ध्यान शब्दों की ध्वनि सुनकर उसकों लिखने का रहा उसे शब्द ताली से शब्दों को तोड़ना तथा जोड़ने का अभ्यास करवाया गया। क्योंकि वह सारे शब्दों को एक लाईन में जोड़ देती थी। जैसे 'लानीलाकानममी'का कोई अर्थ नहीं निकलता है। इसके लिए उसे दो अक्षरों को लाईन से जोड़ने का अभ्यास करवाया गया। फिर उनकों लिखना व पास–पास के अक्षरों को जोड़ कर पठन करवाना कारगर साबित हुआ।
- फरवरी के आखरी दिनों में अक्षर चार्ट से शब्द निर्माण करवाना रहा। जिसका उसने आसान तरीके से सीख लिया। शब्द निर्माण के साथ–साथ शब्दों के चित्र बनाना जारी रखा गया। आज नोरती अक्षर चार्ट से शब्द निर्माण कर लेती है। उनको पढ़ भी लेती है।

मार्च 2010

- उसके परिवार की विशेष परिस्थिति के कारण अभी भी उसे वर्ण समूह एक जारी रखा गया है। वर्तमान में अपने परिवार के साथ हरियाणा गेहूँ कटाई के लिए एक– माह के लिए पलायन कर गई है। नोरती की शाला में अनियमिता के कारण वर्ण समूह–1 का शिक्षण कार्य अभी जारी है।

9.2 गीता बलाई

अक्टूबर व नवम्बर 2009

- शुरूआती महीने अक्टूबर में गीता को वर्णमाला की 2 लाईन याद थी। लेकिन जब उसे कहा जाता की ज, घ, कान, लिखो तो वह नहीं लिख पाती थी। अर्थात उसे केवल रटा था। देखकर वर्ण या अक्षर/शब्द की नकल कर लेती थी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

➢ वर्ण समूह एक से पढ़ाना प्रारम्भ किया गया। जिसमें अक्षर चार्ट उच्चारण व पठन तथा वर्ण पहचान करवाया गया। गीता नवम्बर के अन्त तक वर्ण समूह एक के अक्षर चार्ट में से वर्ण/अक्षर पहचाने लग गई तथा प्रारम्भिक ध्वनि से भी शब्द की पकड़ करने लगी। लेकिन श्रुतलेख (वर्ण/शब्दों) की पकड़ बिल्कुल नहीं कर पाई अतः अभी भी इसकों शब्द की प्रथम ध्वनि का पक्का अभ्यास व लेखन पर जोर दिया गया जिससे पकड़ बनने लगी।

दिसम्बर 2009 व जनवरी 2010

➢ गीता को अक्षरों से शब्द निर्माण की प्रक्रिया में काफी दिक्कत आ रही है। जिसके लिए फ्लैश कार्ड से शब्दों को बनाना तथा तोड़ना व दोनों वर्ण/अक्षर की ध्वनि का अलग–अलग उच्चारण लेखन करवाया गया। तो गीता की समझ बनी कि अलग–अलग ध्वनि को जोड़ने से शब्द बनते है। तथा उनके जुड़े अक्षरों से सार्थक अर्थ होना चाहिए। अब वह छोटे–छोटे शब्द अक्षर बोलने पर (वर्ण समूह–1) लिख लेती है। जैसे नी, पी, मा, ला, कान, लाल, नीला, आदि। गीता को स्थानीय शब्द जैसे नीम, काका, लाना, नानी, पीपा, लाली, पानी, लिखने में ज्यादा आसानी रहती थी तथा इसकी पकड़ अच्छी कर ली।

➢ गीता को शब्दों के चित्र बनाने में दिक्कत थी। इसके लिए उसे घर के आँगन में माड़ने के चित्र बनाने को प्रोत्साहित किया गया ताकि उसकी चित्रों के प्रति झिझक कम हो गई।

फरवरी व मार्च 2010

➢ पक्की समझ के लिए वर्ण समूह–1 के अक्षर चार्ट से शब्द निर्माण तथा चित्र निर्माण गीता ने किया। जैसे काली, लाली, कप, पीपा, नाना, कानी, माला, आदि साथ ही शब्द को तोड़कर उसकों वापस अक्षर चार्ट में खोज लेना तथा पुनः लिख देना। गीता क, प, म, के शुरूआती अक्षरों के शब्दों के चित्रों की अच्छी रेल बनाने लग गई है। ड़िब्बों में चित्र बनाना साथ ही अक्षर चार्ट से

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अक्षर चुनकर शब्द बनाना, कविता का पठन तथा उच्चारण के साथ लेखन चल रहा है।

- गीता ने वर्ण समूह–1 पूर्ण कर लिया है। दूसरे के अक्षर चार्ट का उच्चारण तथा पठन जारी है।

9.3 सोनी बलाई

अक्टूबर व नवम्बर 2009

- सोनी को वर्ण समूह पठन से पूर्व कुछ वर्ण लिखना अवश्य आता था लेकिन पहचान नहीं थी। क, ख, ग, का को कैसे पढ़ना है व चिन्ह तथा ध्वनि में तालमेल नहीं था।
- नवम्बर माह तक सोनी को शब्द की प्रथम ध्वनि तथा उसकी पहचान तथा उसे लिखना सीख लिया। लेकिन शब्द तथा वर्णो को नहीं लिख पाती जैसे कान, नमक, कमला, पानी, को वह क्रमश इस प्रकार से लिखती जैसे कनद्रा, नमई, पान, अ, इ, अ, ननाआपा आदि। फिर इसे सुधार वास्ते अक्षर चार्ट की पकड़ पक्की करवाई गई। ताकि पास–पास के अक्षर को जोड़कर शब्द निर्माण कर सकें।

दिसम्बर 2009 व जनवरी 2010

- शब्द की प्रथम ध्वनि की पकड़ सोनी को पक्की हुई तथा अब वर्ण तथा शब्दों का पठन तथा लेखन अलग–अलग गतिविधियों से जारी रखा गया। अभी भी वर्ण व शब्द को अलग करना सोनी के लिए मुश्किल था।
- इस मुश्किल से उबारने के लिए सरलतम शब्द तथा वर्णो का अभ्यास करवाया गया जैसे आ, पा, ला, का, काकी, मामा, नानी, तथा इनके चित्र भी बनवाना तथा फ्लैश कार्ड़ से अक्षर/वर्ण तथा शब्द जोड़कर बताना। उसके लिए हितकर रहा और जनवरी के अन्त तक उसने शब्द वर्ण समूह एक के पठन, लेखन (श्रुतलेख) की समझ बनने लगी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

फरवरी व मार्च 2010

- जब सोनी की समझ शब्द पठन में बनने लगी तो शब्दों की पहचान ध्वनि से कराना तथा उसे पुनः लिखवाने का अभ्यास करवाया जिसे उसने जल्द पकड़ किया। अब सोनी की अक्षर चार्ट से शब्द निर्माण के साथ–साथ उनके चित्र बनाना तथा शब्दों को उनकी ध्वनि के आधार पर जोड़ना अच्छा लगा तथा सुगमता से सीख गई।
- अक्षर चार्ट से सोनी अब दूर–दूर के अक्षर लेकर शब्द बना लेती हैं। वर्ण समूह एक की कविता पठन, लेखन (श्रुतलेख) कर लेती है। सोनी ने वर्ण समूह–2 के वर्ण पहचान तथा उसकी ध्वनि तथा चिन्ह में तालमेल भी आने लग गए है।

9.4 सबीना मुसलमान

अक्टूबर व नवम्बर 2009

- सबीना को अक्टूबर माह के प्रारम्भ तक वर्णमाला के संयुक्त अक्षर तथा ण, न तथा ञ स्वरों के अलावा वर्ण याद थे। लेकिन जब उनकों बीच–बीच में से पठन करवाया जाता तो नहीं कर पाती थी। जबकि क्रमबद्धता से बिना देखे लिख देती थी। क्योंकि उसने ज्यो का त्यों रट लिया था। शुरूआती 2–3 वर्ण माला के पठन कर लेती लेकिन ग व घ की ध्वनि च व छ की ध्वनि को अलग पहचान (उच्चारण) की नहीं थी तथा ग को घ कह देती या घ को ग कह देती थी।
- सबीना को सीधा अक्षर चार्ट का उच्चारण, पठन, सभी दिशाओं से करवाना शुरू किया। साथ ही शब्दों की शुरूआती ध्वनि तथा क, प, म, ल, न से प्रथम ध्वनि वाली चीजों को अलग करना तथा रेल में उनकों बैठाना तथा यह उसने नवम्बर तक पूर्ण कर लिया।
- सबीना की चित्र में भी अच्छी रूचि है। लेकिन श्रुतलेख में शब्द लिखना नहीं आया है। कपा, अ, न, की, नक (नाक) आदि निरर्थक शब्द श्रुतलेख में लिखती है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

दिसम्बर 2009 व जनवरी 2010

- शुरूआती ध्वनि अभ्यास के साथ–साथ फ्लैश कार्ड़ से अक्षर जोड़ना तथा उनकों लिखना समीना को रूचिकर लगा। कविता के शब्द फ्लैश कार्ड़ से जोड़ना तथा उनकों लिखने में समीना ने विशेष रूचि दिखाई तथा जनवरी के अन्त तक उसने वर्ण समूह एक पूर्ण कर लिया। अक्षर चार्ट (वर्ण समूह–1) से समीना कहीं से भी अक्षर चुनकर शब्द बनाने में सक्षम हैं तथा उनकों फ्लैश कार्ड़ से बना लेती है। फ्लैश कार्ड़ से समीना वाक्य जोड़ लेती है। जैसे नल का पानी, नानी आम लाई आदि तथा लिख भी देती है।

फरवरी व मार्च 2010

- समीना अब वर्ण समूह–2 में है। जहां शब्द की शुरूआती आवाज तुरन्त पहचान लेती है तथा लिख देती है जैसे चीनी में ची आयेगा। अक्षर चार्ट को सभी दिशाओं में पढ़ लेती है तथा पास–पास के अक्षर जोड़ लेती है।
- अब उसने वर्ण समूह–1 व 2 के संयुक्त अक्षर चार्ट से शब्द निर्माण धीरे–धीरे प्रारम्भ कर दिया है। कक्षा की अन्य बच्चियों की अपेक्षा समीना ने तेजी से सीखा है। तीन अक्षरों के शब्द जैसे मकान, नीपना, पपीता, काली–काली, माला लाना, आदि शब्दों का लेखन समझ से कर लेती है।

9.5 ग्यारसी बैरवा

अक्टूबर व नवम्बर 2009

- ग्यारसी को चित्र बनाने में रूचि थी तथा अक्टूबर के शुरूआती समय में उसकों वर्ण की पहचान तथा ध्वनि का तालमेल नहीं था पर देखकर नकल कर उतार लेना जानती थी। अतः यहां उसकों बुनियादी मोड़ पर कम ध्यान देते हुए चित्रों पर ज्यादा ध्यान देते हुए वर्ण समूह एक प्रारम्भ किया गया। शब्द की शुरूआती ध्वनि तथा शब्द के पहले अक्षर की ध्वनि पर ध्यान दिया गया। नवम्बर के प्रारम्भ तक तो ग्यारसी के इसमें तालमेल नहीं बैठा न ही श्रुतलेख लिख पाती थी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

दिसम्बर 2009 व जनवरी 2010

- गाँव के स्थानीय चीजों के नाम जैसे काकड़ी, काचरा, केला, परीण्ड़ा, पाटी, मनकी, माचा, मेला, की शुरूआती ध्वनि तथा वर्णो की रेल पर ध्यान दिया गया।
- जिसकों वह सहजता से समझ गई। उसके तुरन्त बाद ग्यारसी ने सीखना प्रारम्भ किया। उसने कम समय में ही वर्ण समूह एक का उच्चारण व पठन सीख लिया। अब फ्लैश कार्ड़ के दौरान अक्षर मिलाना तथा शब्द ताली से शब्द जोड़ना तथा तोड़ना सीख लिया है जैसे ना.........ना.... नाना, मा...........मा... मामा, ला........ली......लाली तथा इनके चित्र भी बनाने लग गई है।
- ग्यारसी सीखने में धैर्य रखती है। समझ में नही आता है तो अपनी असहमती जाहिर कर देती हैं। हिचकिचाहट नहीं रखती। अब भी ग्यारसी के चित्र बनाने की रूचि से सुन्दर चित्र बनाती हैं। जनवरी के अन्त तक ग्यारसी को शब्द की शुरूआती ध्वनि, जोड़ियां मिलाकर लिखना तथा शब्द के अक्षर को मिलाकर शब्द निर्माण कर लेना आ गया है।

फरवरी व मार्च 2010

- ग्यारसी के चाचा की मृत्यु के कारण शाला में अनियमिता के चलते उसकी गति पर अवश्य ही फर्क पड़ा है। लेकिन अब ग्यारसी अक्षर चार्ट से शब्द निर्माण तथा उनके चिन्ह को आसानी से बता देती है। ध्वनि तथा चिन्ह का तालमेल बन गया हैं। वर्ण समूह एक के शब्द श्रुतलेख में बिना गलती किए शब्द तथा वाक्य लिख लेती है। जैसे माला, नानी, कान, पानी, लाई, पालक, आदि तथा कविता को लिख लेती है।
- अब ग्यारसी वर्ण समूह–2 के अक्षर चार्ट पर आ गई है। उनकी शुरूआती ध्वनि की पकड़ कर ली गई है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

10. निष्कर्ष :

1. बड़े बच्चों में अक्सर यह देखा गया है कि उनके परिवार की जिम्मेदारी, आर्थिक परेशानी, तनाव आदि का प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। जिससे उनके सीखने की गति कम हो जाती हैं।
2. बड़े बच्चों को छोटे बच्चों के साथ पढ़ने में असहजता महसूस होती हैं।
3. शिक्षा में बच्चों के परिवेश के शब्द तथा उनकी भाषा को कक्षा में महत्त्व दिया जाएं तो बच्चे सरलता से पठन व लेखन से अपना सम्बन्ध बना लेते हैं।
4. बड़े बच्चों के साथ जो सामाजिक परिस्थितियों को समझकर व उनके तनावपूर्ण स्थिति के प्रति संदेवनशील होकर ही उन्हें शिक्षा से जोड़ सकते हैं।

11. भाग 2 – केस स्टेड़ी

11.1 केस स्टेड़ी : ग्यारसी बैरवा

ग्यारसी देवी की उम्र लगभग 11–12 वर्ष की हैं। जो रात्रिशाला चुरली की कक्षा–2 में पढ़ती है। ग्यारसी के पिता रामस्वरूप जी खेती–बाड़ी का कार्य करते है तथा बाकी समय ट्रेक्टर चलाते है। माँ का नाम सम्पत्ति देवी है जो अनपढ़ है। पिता रामस्वरूप 5 वीं कक्षा तक पढ़े लिखे है। वह अपने भाई–बहिनों में सबसे बड़ी है । गंगा, धनराज, जमना और सबसे छोटी है धारा। उसके परिवार की आर्थिक स्थिति राष्ट्रीय राजमार्ग के पास अपनी जमीन बैचने के कारण, अब ठीक–ठाक है। इससे पहले बहुत गरीब थे। आर्थिक तंगी के कारण अपने बच्चों पर भी उचित ध्यान नहीं देते थे। जिससे ग्यारसी, गंगा, व धनराज का शाला में ठहराव भी अनियमित रहता है। अपने बच्चों को कभी पढ़ाई के बारे में नहीं पूछते थे। इस कारण ग्यारसी के पढ़ने की उम्र होने पर भी वह स्कूल नहीं जाती थी और इधर–उधर खेलती रहती थी। या अपनी मम्मी के साथ काम के लिए चली जाती है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ग्यारसी का नामांकन रात्रिशाला में था परन्तु वह कभी–कभी ही आती थी। उसकी पढ़ाई पर माता–पिता का कोई ध्यान नहीं था। उसके पिता जी के एक छोटा भाई है। जिसका नाम रंगलाला है। रंगलाल जो अक्सर बिमार रहता है और ईलाज भी ले रहा है। जिससे उसके बच्चों की जिम्मेदारी भी रामस्वरूप पर आ गई है। रामस्वरूप जी के चुरली में घर (मकान) की जमीन के अलाव और कुछ भी नहीं है। चुरली में 18 से 20 बीघा जमीन है जो कि 15 किलोमीटर दूर है। जहां पर खेती करना मुश्किल हो रहा है। इन वर्षो में अकाल के कारण स्थिति ठीक नहीं रही है।

ग्यारसी बहुत कम बोलती है। शाला में भी अपनी सहेलियों से कम बाते करती है। क्योंकि उसे लगता है कि उसे अभी पढ़ना–लिखना नहीं आ रहा हैं। जबकि उसके साथ वाली बच्चियां पढ़ लेती है। उसमें निराशा की भावना घर कर गई है। लेकिन ग्यारसी को शान्त भाव से अलग से पूछते हैं तो सहजता से जवाब देती है। ग्यारसी के परिवार में छोटे भाई–बहिन सरकारी शाला में पढ़ते है। वह क, प, म, ल, न व अक्षर का पठन सीधे रूप में कर लेती है लेकिन ध्वनि तथा चिन्ह में तालमेंल नहीं बिठा पाती है। लेकिन जब उसे थोड़ा अलग से व्यक्तिगत रूप से ध्यान दिया जाता है तो वह सीख जाती है। उसको एक बार में बहुत कम वर्ण या अक्षर पूछे जायें तो वह पठन कर लेती है । लेकिन जब अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाते है और पठन करवाया जाता है तो वह कुछ समय तक चुप रहती है फिर बोलती है। जबकि उसे समझ में नहीं आता तब वह पठन करने में देर लगाती है। परन्तु जब समझ भी जाती है तब भी उसमें झिंझक रहती है और बोलने में थोड़ी देर लगाती है।

11.2 केस स्टेड़ी : गीता बलाई

गीता बलाई कक्षा 3 में अध्ययनरत है। उसकी उम्र 15 वर्ष है। गीता बचपन में अपने चाचा नारू जी के पास 5–6 वर्ण तक रहीं । उसके बाद अपने पिता उगमाराम के पास रहती है। शुरूआती समय पर गीता की पढ़ाई पर उसके चाचा–चाची ने लाड़–प्यार के कारण ध्यान नहीं दिया। नवम्बर 09 में जब गीता के परिवार तथा उसके पढ़ने–लिखने तथा उसके शाला व्यवहार पर ध्यान दिया गया। सबसे पीछे बैठना, शर्माना तथा अध्यापक पढ़ाये तो कोई रूचि नहीं दिखाना। इसका कारण था कि वह उम्र में बड़ी तथा उससे छोटी लड़कियां कक्षा 4 व कक्षा 5 में पढ़ना। उसे लगता की उसे कुछ पढ़ना नहीं आता था। वह

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

देखकर नकल कर उतार लेती थी। जब उसके अभिभावकों तथा अध्यापक से मिलते रहे तथा उसे उम्र में बड़ी होने का कक्षा में किस प्रकार उपयोग किया जाये ताकि उसकी झिझक कम हो तो हर काम में उससे पहल करवाया गया। बार–बार शिक्षण के दौरान बोर्ड़ पर लिखवाना, उच्चारण करवाना तथा कक्षा में अनुशासन बनाना ताकि गीता को लगे की मैं पढ़ने में कमजोर हूँ तो क्या में अन्य काम तो इनसे ज्यादा अच्छे तरीके से करती हूँ। बकरियों को चराकर लाने के कारण थकान से कभी–कभी वह शाला आने से मना भी करती क्योंकि उसके पास घर कि जिम्मेदारी, बकरियां चराना, साग–रोटी बनाना, पानी लाना, चारा ड़ालना, सफाई करना आदि कार्य रहता था। गीता को शुरूआती समय से वर्ण समूह में रूचि लगी और उसने वर्ण समूह की गतिविधियों में अन्य बच्चों की तरह भाग लेना शुरू कर दिया। वर्ण समूह में उसको ध्वनि तथा चिन्ह का तालमेल पक्का करवाया गया। फिर सार्थक शब्द निर्माण तथा शब्दों के चित्र, शब्द ताली तथा वर्ण समूह से सम्बन्धित गतिविधियों में उसकों आगे लाए और अब गीता कक्षा को पहले बोर्ड़ पर आकर बताने लगी हैं। उसे लगा की जो मेरी कमजोरी थी की मैं बड़ी हूँ मुझे अभी तक पढ़ना नहीं आया। मैं नहीं पढ़ पाऊंगी वह भ्रम टूट गया कि उम्र से कोई फर्क नहीं पड़ता । सीखने के लिए ज्यादा मेहनत करूंगी तो जल्दी सीख जाऊंगी। वर्ण समूह दो पढ़ रही है गीता, अक्षर, वर्ण, शब्द तथा कविता का श्रुतलेख तथा उनके चित्र समझदारी से बना लेती है। कक्षा में खुलकर कविता उच्चारण, हावभाव से नहीं करती हैं क्योंकि अभी भी उसमें झिझक हैं कि मैं गलत बोलूगी तो ये मुझ पर हँसेगें।

गीता के साप्ताहिक टेस्ट लिए जाते रहें। उससे भी उसके लेखन तथा श्रुतलेख में काफी सुधार आया हैं तथा अंकों में लगतार वृद्धि हो रही है।

11.3 केस स्टेड़ी : नोरती बागरिया

नोरती देवी की उम्र लगभग 13 साल हैं व उसके गाँव का नाम रामपुरा है। उसके पिता का नाम हनुमान जी हैं उनकी जाति बागरिया हैं। माँ का नाम सन्तरा हैं। दोनों अनपढ़ है। वे चार भाई–बहिन हैं। दो भाई दो बहनें। अपनी छोटी बहन लीला को भी वह रात्रिशाला में पढ़ने ले जाती हैं। नोरती दिन में बकरियां चराती है तथा घर के सभी काम करती हैं। दिन भर की हारी–थाकी नोरती सायं को

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

रात्रिशाला में पढ़ने जाती है । शाला में अन्य लड़कियों से बड़ी होने पर भी वह कक्षा–2 में ही पढ़ती है। अभी नोरती वर्ण व अक्षर पहचान नहीं कर पाती है तथा बहुत झिझक रखती है और बहुत कम बोलती है। ऐसा लगता है जैसे उसमें कुछ ड़र सा बैठा हैं। बातचीत में कम शब्दों में ही अपनी बात कहने का प्रयास करती हैं।

नोरती का परिवार बहुत गरीब हैं। इनके कच्चा मूंड़ (एक प्रकार की रेत व कंकरी) का मकान हैं तथा छपरा भी बना रखा है। घर में बिजली, फोन, साईकिल कुछ भी नहीं है। नोतरी के दादा–दादी इन्हीं के पास रहते हैं। इनकी गरीबी का मुख्य कारण 10–15 बीघा जमीन को एक जमीनदार (गहलोता के जाट) के पास गिरवी रखना हैं। वहीं उस पर खेती करता है । लगभग एक लाख रू के कर्ज में डूबा ये परिवार अपनी जमीन हाथ से निकलती देख बहुत घबराया हुआ हैं। उनकी यही चिंता बनी रहती हैं कि जमीन कैसे वापस ली जाएं। इसका प्रभाव सभी सदस्यों पर पड़ रहा है। इस कारण वह अपने परिवार को न अच्छा पढ़ा पाते है और न ही अच्छे से देख–रेख कर पाते हैं । नोरती की दादी केली देवी सुबह–सायं बच्चों को रात्रिशाला व बालवाड़ी में अपनी ढ़ाणी से लाती व ले जाती है। इसके बदले में उन्हें 200/– रु. माह दिये जाते हैं।

बागरिया समाज को अभी भी बराबरी का दर्जा नहीं मिला हुआ हैं। अभी भी वह अपने आप को हीन मानते है और वह स्वर्ण जाति के लोगों के तले दबे हुए हैं। यहां तक कि वे आज भी खाट पर स्वर्ण जाति के लोगों के बराबर नहीं बैठते ।

नोरती को पढ़ने में बहुत दिक्कत आती है। जहां पर उसके हम उम्र की लड़कियां पढ़–लिख गई हैं उसने बताया वे पढ़ाई पर अपना मन नहीं लगा पाती हैं। परिवार के तनाव का असर उसकी पढ़ाई पर साफ दिखाई देता हैं। साथ ही में उसका परिवार मजदूरी के लिए पलायन करता हैं और नोरती भी उसने साथ हरियाणा फसल काटने चली जाती हैं। इस कारण वह रात्रिशाला में अनियमित रहती है।

11.4 केस स्टेड़ी : समीना

समीना रात्रि विद्यालय में पढ़ने आती है। उसने उर्दू व कुरान पढ़ना सीख लिया हैं। उसकी उम्र लगभग 12–13 वर्ण हैं,। वह लम्बे कद की दुबली–पतली सावली सी हैं। जब हम उनके घर पहुँचे तो समीना ने हमें देखते ही नमस्ते कहा, उसके माँ और पिताजी भी घर

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

से बाहर आ गए। उनका मकान कच्चा हैं। बाहर से मिट्टी की लिपाई किए शायद काफी दिन हो गए। इसलिए मकान जर्जर स्थिति में लग रहा था।

समीना के पिताजी थोड़े अधेड़ उम्र के लग रहे थे। माँ भी मेले–कुचेले सलवार कुर्ता व दुपटा सिर पर ड़ाले बाहर आई थी। उन्हें मैंने नमस्ते कहा तथा साथ ही में मैंने पूछा खाना खा लिया क्या ? समीना की माँ बहुत ही दुखी मन से बोली, " मैं तो बहुत दुखी हूँ। मेरा बेटा जो सबसे बड़ा था उसकी मृत्यु कुछ ही साल पूर्व टी.बी. के कारण हो गई। वही मार्बल एरिया में कमाने जाता था। उसकी शादी भी कर दी थी। उसके दो सन्तान है, जो नानी के पास रहते हैं। मेरी बहु दानकी (मजदूरी) करके उन्हें पाल रही हैं। मेरा बेटा बहुत ही प्यारा व कमाऊ था। अगर वह जिन्दा होता तो हमारी दयनीय स्थिति नहीं होती। "

समीना के पापा भी अपने लाड़ले को भूल नहीं पा रहे थे। उन्होंने भी अपने बेटे को याद कर कहा कि उसी ने आटा पीसने की चक्की खरीदी थी। हमें सुख पहुँचाने के लिए वह बहुत कुछ कर रहा था। क्या करे वह अल्ला को प्यारा हो गया। उसी की बाते व बीमारी के इलाज की बाते ही करते है। उन्होंने कहा मेंरे दो बेटे और तीन बेटियां और हैं। हमनें एक बेटी की शादी कर दी हैं। अब समीना और इससे बड़ी बेटी हैं जिनकी शादीयाँ करनी है। देखों कब होगी ?

उन्होने बच्चों को पढ़ाने का ध्यान ज्यादा उर्दू व कुरान शरीफ पढ़ाने को दिया। मगर हिन्दी को पढ़ाने के लिए विद्यालय नहीं भेजा। उन्हे जरूरत ही महसूस नहीं हुई। लेकिन अब में समीना को रात्रि विद्यालय में पढ़ने भेज रहे हैं। उन्हे लगता है कि हिन्दी भी आनी चाहिए। अब समीना हिन्दी भी पढ़ना सीख रही है ।

जब समीना के घर के अन्दर गए तो पाया घर में जरूरत का सामान ही था। दो खाटे, चुल्हा, एक स्टील का घड़ा व चरी। घर अन्दर से भी जर्जर ही था। समीना की माँ ने बताया कि बरसात में पानी टपकता हैं बहुत परेशानी होती है। समीना का भाई बकरियां चराने जाता है। 15–20 बकरियां है। जिनसे दूध, दही हो जाता है। बकरे होने पर बैच दिए जाते है। उनका गुजारा इन बकरियों से होता है। समीना के पापा भी मजदूरी कर लेते है। उसकी माँ नरेगा में जाती हैं। उनके पास 12–15 बीघा जमीन है। कुँआ भी है। मगर पानी नहीं है । कुँआ को गहरा कराने की जरूरत है। समीना के पापा पटवारी से बता करने

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

गए थे। सरकारी खर्च से उसे गहरा करवा दिया जाए तो अच्छा है। खेती बिना पानी के कुछ नहीं देती है।

घर की स्थिति और परिवार की मनोदशा समीना को क्या देगी। समीना के मन पर घर की स्थिति का गहरा प्रभाव पड़ा है। उसकी मृदुल–वाणी व उसके बोलने के तरीके ने हमें प्रोत्साहित किया है। समीना से जब पूछा गया कि तुम्हें पढ़ना अच्छा लगा ? समीना ने कहा मुझे पढ़ना अच्छा लगता है। मगर मेरे घर की स्थिति मुझे कुछ भी करने से रोकती है। मैं अपने माँ–बाप के दुखों को सुनती हूँ। तो अल्ला से यही कहती हूँ अल्ला मेरे परिवार को खुशी दो। मैं क्या करू अब मैं समझने लगी हूँ। काश मुझे पढ़ाया होता तो मैं कोई नौकरी कर लेती। हम बहुत गरीब हैं और ऊपर से भाई की मौत ने हमारे ऊपर पहाड़ सा तोड़ दिया है।

समीना अब समझदार है अपने परिवार के दुखों का एहसास उसे बहुत ज्यादा है। वह अपने लिए कुछ सोच भी नहीं सकती है। उसे सोचने का मौका भी तो नहीं देती है उसकी परिस्थितियाँ । मैंने पूछा तुम सबसे ज्यादा कब खुश थी। उसने बताया जब मेरा भाई कमाने गया और उसकी शादी हुई तब मैं ज्यादा खुश थी। खुशी समीना की क्षणिक ही थी। उसके बाद तो दुखों के बादल ऐसे छा गए कि खुशी कहीं दूर तक उसकी जिन्दगी में नहीं आई। वह 24 घंटे अपने परिवार के इन काले अंधेरों के साथ रहती है। उसका अपना कोई अस्तित्व ही जैसे नहीं है। हाँ कुछ सालों में शादी हो जाने पर आशा है कि उसे वहां खुशियां मिले व सुखी रहे। वह कहती है जब वह रात्रि विद्यालय गई उसे अच्छा लगा। वह बिना रूके वहां पढ़ने जाती है। समीना को रात्रि विद्यालय में ऐसा क्या मिलता है कि वह रोज वहां जाती है। वहां जाकर वह खुश है। रात्रि विद्यालय में उसे अपनी जैसी अन्य सहेलियाँ मिलती है। उसे वहा बड़े प्यार से पढ़ाया जाता है । वो लिखना पढ़ना सीख गई हैं । वह सबके साथ नई नई बातो से प्रोत्साहित होती है। वह दूर का नहीं सोचती है। बल्कि हर पल को वह जीना चाहती हैं। अपने आपकों सवारना चाहती हैं। इतनी कठिन परिस्थितियों में भी उसकी मुस्कराहट एक हिम्मत देती है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

11.5 केस स्टेड़ी : सोनी बलाई

सोनी 11–12 वर्ष की हैं।। वह अपने फूफा जी के पास रहती हैं। फूफा व बुआ के कोई औलाद नहीं है। वह 4–5 माह की थी तभी उसे अपने पासे ले आएं थे। उन्होंने उसे बहुत लाड़ प्यार से पाला हैं। उन्होंने उसे वो सब कुछ दिया है जो एक बच्चों को मिलना चाहिए। सोनी के फूफा ने बताया कि उन्होंने उसे स्कूल भी पढ़ने भेजा था परन्तु उसका मन सरकारी स्कूल में नहीं लगा। वह स्कूल से भाग कर घर आ जाती थी, और दो–तीन माह बाद तो उसने स्कूल जाना ही बन्द कर दिया। सोनी के फूफा जागरूक हैं और शिक्षा के महत्त्व को समझते है। वे कहते है मैं अनपढ़ हूँ परन्तु मैं चाहता था सोनी पढ़ाई करे, पर इसे स्कूल भेजने में नाकामयाब रहा। अब वे रात्रिशाला में पढ़ने जाती है।

सोनी के पास घर की कोई जिम्मेदारी नहीं है। उसे बहुत लाड़–प्यार मिला हैं। वे खुद बकरियां चराना चाहती थी। छोटी उम्र में वे अपने जीवन के लिए सही निर्णय लेने में असमर्थ थी। परिवार का थोड़ा सा ध्यान होता और उसके मन को पढ़ाई की ओर लगाने में जोर देते तो सोनी आज पढ़ी–लिखी होती। जो भी हुआ सोनी को शिक्षा से वंचित होना पड़ा। अगर उसके फूफा पढ़े–लिखे होते तो शायद सोनी को स्वयं पढ़ाते और स्कूल में उसे भेजकर ध्यान पढ़ाई की ओर अग्रसर करते या प्रोत्साहित करते।

हँसता चेहरा, गोरे रंग की सोनी, जब उससे पूछा तुम्हे रात को स्कूल जाना अच्छा लगता है ? सोनी ने कहा वह रोज स्कूल जाती है। मगर वहां पढ़ाया हुआ भूल जाती हैं। मेरे फूफा मुझ से कुछ पढ़वाते है या लिखवाते है तब मैं कुछ ही अक्षरों को पढ़ पाती हूँ। उसमें आत्म–विश्वास की कमी साफ झलक रही थी। जब हमने उससे कुछ लिखवाया तो सोनी ने तुरन्त लिख दिया। फिर मैने फूफा जी से कहा सोनी तो सब लिख लेती है आप कैसे कहते है सोनी नहीं लिख पाती है। वे चुप थे, सोनी के फूफा सोनी के लिखने व पढ़ने पर खुश लग रहे थे। परन्तु उनकी अपेक्षा थी वह जो वह बोले, वह सब कुछ लिख दे । अब फूफा जी ने यह एहसास किया की सोनी अभी पहली सीढ़ी पर ही पढ़ी है उसे अभी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अगली सीढ़ी पर जाना है। यानि पढ़ाई लिखाई का एक कदम मजबूती से रखने के पश्चात ही दूसरा कदम बढ़ाएंगी।

आज सोनी का आत्म–विश्वास बढ़ा है। उसके फूफा भी इसे प्रोत्साहित करने लगे हैं। अब उसके चेहरे पर थोड़ी चमक आई है। हमेशा मुस्कुराने वाली सोनी ने अपने फूफा को बता दिया कि जितना सिखाया जाता है उतना ही बता सकती है। अब सोनी बकरियों को चराने के साथ–साथ अपनी कॉपी साथ ले जाती है। जो शाला में सिखती है उसे अपने फूफा जी को लिखकर बताती है। फूफा जी भी उसके लिखने–पढ़ने में रूची लेते हैं।

फूफा जी का मकान पक्का है। बकरियां ही उनका कमाई का साधन है। साथ में नरेगा में मजदूरी भी कर लेते है। आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं हैं परन्तु फिर भी सोनी की देख–रेख में किसी तरह की कमी नहीं आने देते हैं।

12. भाग 3 अध्यापक साक्षात्कार

12.1 रात्रिशाला अध्यापक चुरली – विश्राम भांभी

1. **प्रश्न** : लड़का–लड़की की शिक्षा के बारे में आपके विचार क्या हैं ?

   उत्तर : लड़का हो या लड़की दोनों को समान रूप से पढ़ाना जरूरी हैं। पढ़ाई के साथ –साथ उनके खान–पान, खेलकूद, रहन–सहन में भी दोनों को समान रखना चाहिए। हमारे यहां लड़कियों की शिक्षा पर कम ध्यान दिया जाता हैं।

2. **प्रश्न** : सबीना तथा ग्यारसी के व्यवहार में अक्टूबर माह से अब तक किस प्रकार का फर्क नजर आया हैं ?

   उत्तर : ये दोनों लड़कियां पहले कम बोलती थी तथा दबी–दबी रहती व कक्षा में पीछे बैठी रहती अब कक्षा में पढ़ाई–लिखाई हो या खेलकूद सबसे आगे रहती हैं तथा स्कूल में इनका ठहराव बढ़ गया हैं स्वतः आती हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

3. **प्रश्न** : आप हिन्दी जिस विधि से पढ़ाते हैं उससे बारे में आपकी क्या सोच है?

उत्तर : छ माह में वर्ण समूह पद्धति (ईएलपी) से पढ़ाता हूँ। यह अध्यापक तथा बच्चों दोनों के लिए सरल तथा रूचिपूर्ण, खेल–खेल में सीखने वाली विधि हैं।

4. **प्रश्न** : वर्ण समूह पद्धति से आप कैसे पढ़ाते हैं ? संक्षिप्त रूप में बताएं

उत्तर : सबसे पहले बच्चों में मौखिक माहौल बनाना। वर्ण समूह एक के वर्ण क, प, म, ल, न के बुनियादी मोड़ का अभ्यास, पहचान विभिन्न गतिविधियों से करवाते हैं तथा परिवेश की चीजों से उन शब्दों की शुरूआती ध्वनि की पहचान करवाना जैसे क की पहचान (शुरूआती ध्वनि) कन्चा, कंगा, केलड़ी, कमरा आदि तथा ठ़ोस सामग्री से घर बनाकर रखवाना, फिर अक्षर चार्ट अभ्यास, तथा पास–पास की ध्वनियों को जोड़ना व शब्द निर्माण के साथ–साथ शब्दों के चित्र चलते रहते है। बच्चे को ध्वनि तथा चिन्ह की पहचान के बाद शब्द तथा कविता, वाक्यों के श्रुतलेख का अभ्यास करवाना ।

5. **प्रश्न** : क्या बच्चे की सीखने की गति पर उसके परिवार का प्रभाव पड़ता है?

उत्तर : हाँ, यदि बच्चे के परिवार में पढ़े–लिखे नहीं है तथा उनकी आर्थिक स्थिति ठ़ीक नहीं हो तो थोड़ा ज्यादा समय लगता है।

6. **प्रश्न** : रिसर्च वाले बच्चों की प्रगति के बारे में बताएं ?

उत्तर : सबीना तथा ग्यारसी ने अच्छी पकड़ की है। ये अक्टूबर से पहले पढ़ना–लिखना नहीं जानती थी। लेकिन आज शब्द, कविता, वाक्य आसानी से पढ़–लिख लेती है और अब एक दूसरे बच्चों से पूरी तरह घुल–मिल गई है। मेरे द्वारा पूरी कक्षा पर समान रूप से ध्यान रखा गया। जिसमें ये दोनों ने अन्य बच्चों की अपेक्षा अच्छी पकड़ की है। इसमें ई.एल.पी की वर्ण समूह पद्धति तथा ई.एल.पी टीम का पूरा सहयोग रहा।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

12.2 रात्रिशाला अध्यापक रामपुरा (हनुमान शर्मा)

1. **प्रश्न** : नोरती, सोनी, तथा गीता की अब तक की प्रगति के बारे में बताएं?

उत्तर : छ माह पूर्व जब अक्टूबर में वर्ण समूह पद्धति से पढ़ाना शुरू किया तब नोरती को कुछ भी पढ़ना लिखना नहीं आता था, गीता तथा सोनी को वर्णो की बुनियादी मोड़ लिखना आता था लेकिन पठन तथा लेखन नहीं आता था। शाला में ठहराव नहीं था लेकिन जब ई.एल.पी की पद्धति से पढ़ाने लगे तो उन्हें रूचि होने लगी।पहले जो पढ़ने के कारण ड़र था वह अब दूर हो गया। अब गीता तथा सोनी ''वर्ण समूह–एक'' के शब्द, वाक्य तथा कविता पढ़ लेती है और लिख लेती है। वर्ण समूह–2 में आ गई है। जबकि नोरती की पारिवारिक परिस्थिति के कारण अनियमितता व पलायन पर जाने के कारण वर्ण समूह–1 मे है। नोरती को ध्वनि तथा चिन्ह का तालमेल है। वह शब्द पठन कर लेती है। शब्द लेखन और वाक्य लेखन में उसकी पूर्ण रूप से पकड़ अब नहीं हैं।

प्र. 2. बच्चों को पढ़ाने के बारे में आपकी सोच क्या हैं ?

उत्तर अध्यापक हनुमान शर्मा ने बताया कि (पढ़े–लिखे) बच्चे अच्छे पढ़े–लिखे तो अच्छा काम करे। बुरे कामों से दूर रहे। लड़के–लड़की दोनों को समान समझना चाहिए। दोनों को पढ़ाना चाहिए। दोनों को पढ़ाना चाहिए। बच्चे पढ़ने से आपसी भेदभाव नहीं करेगें। मेहनत के साथ बच्चों को पढ़ाना जितना मेरे पास ज्ञान है। उतना बच्चों को दूं। बच्चों को सही रास्ता दिखाना अध्यापक की सोच हैं बोझ तो अध्यापक नहीं बाट सकता।

प्र. 3. ई.एल.पी पद्धति से बच्चों में क्या बदलाव आया हैं ?

उत्तर पद्धति से बच्चा समझ के साथ पढ़ना लिखना सीखा। उदाहरण अक्षर चार्ट से अर्थपूर्ण शब्द का निर्माण करना व चित्र बनाना व बोर्ड़ पर लिखना पढ़ना जैसे काकी, काका का चित्र बनाना। पद्धति में सबसे बड़ी बात देखी कि पद्धति से बच्चा ध्वनि और चिन्ह की पहचान ठोस करता है। बुनियादी मोड़ से बच्चा सही लिखना सीखा। ध्वनि द्वारा चिन्ह की पहचान करने लगा। पहले बच्चे

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

रटते थे। अब रटते नहीं है। समझ के साथ ध्वनि व चिन्ह की पहचान करते है। पद्धति के लागू होने से जुड़ाव हुआ। क्योंकि इस में गतिविधि करवाई जाती है। जैसे रेल–रेल बच्चों को बड़ा मजा आता था। बच्चों में बदलाव को देखकर बच्चों के अभिभावक भी खुश होने लगे। इनमें भी रोचकता आने लगी।

प्र. 5. बच्चों के स्कूल आने में क्या रूकावटे थी ?

उत्तर कुछ बच्चों के परिवारों से रूकावटे आने लगी जैसे बागरिया जाति के बच्चे पलायन पर चले जाते है। क्योंकि इनके माँ–बाप गेहूँ काटने हरियाणा जाते है। ये बच्चे भी इनके साथ जाते है। बागरिया जाति के लोग शाम को शराब पीते है। रोले करते है। शाम को बच्चों को पढ़ने नहीं भेजते है। नोरती के पिता की आर्थिक स्थिति खराब है। जमीन गिरवी रखी हुई है। बच्चे के सामने दूसरे से पैसे की माग करता है। नोरती को काम पर भेजता है और थक जाती है। कभी–कभी रात को स्कूल नहीं जाती है।

प्र. 6. शिक्षा के प्रति आपकी क्या सोच हैं ?

उत्तर शिक्षा बच्चों के लिए जरूरी है। पढ़ाना चाहिए। अनपढ़ नहीं रहना चाहिए। अध्यापक ने बताया कि बच्चों के लिए शिक्षा जरूरी है। बच्चों में अच्छे–अच्छे समझदारी आये।

प्र. 7 अध्यापक की ई.एल.पी के प्रति सोच ?

उत्तर ई.एल.पी पद्धति बढ़िया है। इससे बच्चों समझ के साथ पढ़ लेता है। ई.एल.पी से बच्चे और अध्यापक बोर नहीं होते है। ई.एल.पी पद्धति सरल है। यह पद्धति परिवेश से जुड़ी हुई है। पद्धति रोचक है। छोटी कविता, चित्र पढ़न है। पद्धति से बच्चे समझ के साथ पढ़ना लिखना सीखते है। ई.एल.पी पद्धति से बच्चों की नीव मजबूत होती है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

13. बड़े व छोटे बच्चों की तुलना

विवरण	अक्टूबर / नवम्बर	दिसम्बर / जनवरी	फरवरी / मार्च
छोटे बच्चे	1. वर्ण भाषा के कुछ वर्णो की पहचान थी। 2. वर्ण / अक्षर का बुनियादी मोड़ आता था। 3. ध्वनि द्वारा चिन्ह की पहचान करने लगे। 4. परिवेश की चीजों के नाम पूछे व चित्र बनाते है व प्रथम ध्वनि व चिन्ह की पहचान करने लगे।	1. वर्ण समूह–1 के अक्षर चार्ट के अक्षर को जोड़कर अर्थपूर्ण शब्द का निर्माण कर चित्र बनाना, 2. शब्दों को धारा प्रवाह से पढ़ना, 3. शब्द को लिख लेते है।	1. फ्लैश कार्ड द्वारा छोटे–छोटे वाक्य का निम्र्रण करना। 2. कविता का पढ़न व लेखन कर लेते हैं 3. वर्ण समूह–2 के वर्ण / अक्षर की पहचान ध्वनि व चिन्ह की पकड़ शब्दों का श्रुतलेख लिखना
बड़े बच्चे	1. वर्ण / अक्षर पहचान नही थी। वर्ण / अक्षर के बुनियाद आते थे। 2. शब्द की शुरूआती ध्वनि की पहचान तथा वर्ण समूह–1 के वर्णो की पहचान 3. परिवेश से जुड़ी चीजों के शब्दों के चित्र बनाना	1. वर्ण समूह–1 के अक्षर चार्ट से पास–पास के शब्दों को जोड़ना व तथा उनके चित्र बनाना 2. दो शब्दों का पठन तथा लेखन (वर्ण समूह–1)	1. अक्षर चार्ट से शब्द निर्माण तथा शब्दों के चित्र बनाना। 2. शब्द, वाक्य, पठन तथा लेखन कविता पठन। 3. वर्ण समूह–2 के अक्षर / वर्ण की पहचान तथा लेखन पास–पास के अक्षरों से शब्द निर्माण व चित्र

13.1 छोटे व बड़े बच्चों की माहवार तुलनात्मक प्रगति रिपोर्ट :

1. अक्टूबर 2009 से नवम्बर 2010 :

1. दोनों स्तर के बच्चे कुछ वर्ण / अक्षर की पहचान कर लेते है व इनमें कुछ वर्णो के बुनियादी मोड़ की समझ भी हैं।
2. शब्द की शुरूआती ध्वनि की समझ भी हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

3. वर्ण समूह–1 के वर्ण से शुरू होने वाले चीजों के नाम बता देते है जो उनके परिवेश से जुड़े हुए हैं व उनके चित्र भी बना देते हैं।

2. दिसम्बर व जनवरी 2010

1. वर्ण समूह–1 के अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाना व अर्थ निर्माण के लिए चित्र बनाना।
2. परन्तु छोटी आयु के बच्चे वर्ण समूह–1 के अक्षर चार्ट से पास–पास व दूर–दूर व ऊपर–नीचे के अक्षरों को जोड़कर अर्थपूर्ण शब्द बना रहे है एवं उनके अर्थ को दर्शाने के लिए चित्र भी बना लेते है। हालांकि बड़ी आयु के बच्चे बहुत कम चित्र बनाते है।

3. फरवरी मार्च 2010

1. बड़ी आयु के बच्चे अक्षर चार्ट से शब्द खोज पास–पास के अक्षर को जोड़कर करते है। जबकि छोटी आयु के बच्चे दूर–दूर अक्षरों को भी जोड़ कर शब्द निर्माण कर लेते हैं। साथ–साथ मारवाड़ी शब्द भी खोजते है उनके चित्र भी बनाते है। छोटी आयु के बच्चे फ्लैश कार्ड़ द्वारा भी छोटे–छोटे वाक्य का निर्माण कर लेते है। छोटी आयु के बच्चों में रचनात्मकता ज्यादा है। वह बहुत सहज तरीके से शब्दों के चित्र बनाते है। जबकि बड़ी आयु के बच्चों में चित्र बनाने की झिंझक है। छोटी आयु के बच्चे स्वतंत्र रूप से शिक्षण प्रक्रिया में जुड़ते हैं। जबकि बड़ी आयु के बच्चे धर के काम व चिन्ताओं से ग्रसित होने के कारण पूर्ण रूप शिक्षण प्रक्रिया से जुड़ नहीं पाते है। दिनभर के कार्य के कारण रात्रिशाला में थके हुए आते है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

14. निष्कर्ष :

1. कक्षा में स्थानिय भाषा तथा उनके परिवेश से जुड़े शब्दों को स्थान दिये जाने पर उनका रिश्ता पठन–लेखन में सहज हो गया।
2. बड़े बच्चों की अपेक्षा छोटे बच्चों में पठन व लेखन को ग्रहण करने व समझने की गति अधिक हैं।
3. बड़ी आयु के बच्चे अक्षर चार्ट से शब्द खोज पास–पास के अक्षर को जोड़कर करते है। जबकि छोटी आयु के बच्चे दूर–दूर अक्षरों को भी जोड़ कर शब्द निर्माण कर लेते हैं। साथ–साथ मारवाड़ी शब्द भी खोजते है उनके चित्र भी बनाते है।

15. सीख

1. बच्चों की अपनी भाषा में शिक्षण की शुरूआत करना व बच्चों पर हमारी और से कुछ थोपा नहीं जाना चाहिए।
2. बच्चे खेल–खेल में सहजता से सीख जाते है।
3. बच्चों की रचनात्मक अभिव्यक्ति जैसे चित्र बनाना, खिलौने बनाना, मांड़ने माड़ना, आदि से बच्चें की सीखने की गति प्रबल हो जाती है।
4. बच्चों को प्रारम्भिक स्तर पर सरल ठोस बुनियाद पर शिक्षण करना चाहिए। क्योंकि यहीं सीखने की प्रथम सीढ़ी हैं।

16. सुझाव :

1. बच्चों के घर तथा शाला परिवेश के अन्तर को कम करना, बच्चों के अभिभावकों का सम्पर्क में रहना तथा बच्चों के परिवारिक माहौल से अवगत होना।
2. बच्चों को उनकी प्रगति से अवगत कराते रहना ताकि बच्चा प्रोत्साहित होकर आगे बढ़े।
3. बड़े बच्चों के प्रति अधिक संवेदनशीलता बरतनी चाहिए।
4. शहरी तथा ग्रामीण बच्चों के साथ अध्ययन करने का मौका मिलना चाहिए। ताकि तुलनात्मक दृष्टिकोण से पढ़ने–लिखने की प्रक्रिया को समझा जा सके।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

5. पढ़े–लिखे व बिना पढ़े–लिखे परिवार के बच्चों के सीखने में अन्तर को समझने का मौका मिलना चाहिए।

6. अगर हमें 6 माह से अधिक समय मिलता तो इन बच्चों का गहन अध्ययन कर ठोस नतीजे पर पहुंचा जा सकता है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor